Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 8th Jan. 2019, Revised on 18th Jan. 2019; Accepted 28thJan. 2019

आलेख

मातृभाषा की सुंदरता

***डॉ. चित्रा जीतेन्द्र सिंह**
L-82/A-2, Railway Colony, Moradabad, U.P.
drchitrapalsingh@yahoo.com , 9410010561

मुख्य शब्द – जन-मानस, तालीम, *मातृभाषा*

लेख संक्षेप

वर्तमान परिप्रेष्य में भाषा को लेकर जन-मानस में आधुनिकता की सोच के साथ भाषा में भी परिवर्तन नजर आता है. भाषा मनुष्य को मिला हुआ एक वरदान है. वर्तमान में अभिभावक मातृभाषा को नजरअंदाज करते हुए अंग्रेजी भाषा में अपने बच्चो की शिक्षा व तालीम को प्राथमिकता देते है. अभिभावकों की सोच और प्रतियोगिता के इस माहौल में मातृभाषा के प्रति उपेक्षा की जाती है. प्रस्तुत लेख में मातृभाषा की सुंदरता, महत्व और लक्षण के बारे में विस्तार से प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है.

प्रस्तावना

भाषा मनुष्य को मिला एक वरदान है. जो बोल सकते है वही भाषा है. भाषा अभिव्यक्ति का एक माध्यम है. मनुष्य आपने विचार, सवेदना , अभिप्राय इत्यादि सब बोल करया लिखकर व्यक्त कर सकता है. इसीलिए भाषा अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम होने की वजह से विभिन्न विषयो - इतिहास, कला, साहित्य आदि का ज्ञान प्राप्त करने के लिए भाषा का ही प्रयोग करते है. अर्थात विद्यार्थियों को मातृभाषा की शिक्षा योग्य मात्रा में प्राप्त करे यह अपेक्षित है. भाषाके माध्यम से ही विद्यार्थियों का सम्पूर्ण विकास संभव है और यही अपना लक्ष्य भी है. विद्यार्थियों के बौद्धिक, सांस्कृतिक, व्यक्तिक एवं सामाजिक विकास में मातृभाषा सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है. अन्य विषयो का ज्ञान भी स्वयं की मातृभाषा में होता रहे तो मातृभाषा पीढ़ी दर पीढ़ी समृद्ध होती रहे यही जरुरी है.

२१ फरवरी हमेशा "विश्व मातृभाषा दिवस" के तौर पर मनाया जाता है. जिसका उद्येश्य यही है के दुनिया के अलग विस्तार, प्रदेश या राज्यों में बोली जाने वाली मुख्य भाषा जो वहा की मातृभाषा मानी जाती है उसका आगे की पीढ़ी तक हस्तांतरण होता रहे और इसी वजह से मातृभाषा का संरक्षण, संवर्धन और विकास होता रहे.

प्राथमिक और उच्च प्राथमिक कक्षा की स्कूलों में मातृभाषा में शिक्षा के अहम् एवं महत्वपूर्ण लक्षण क्या है इसके बारे में प्रस्तुत लेख केंद्रित है.

मातृभाषा के प्रमुख लक्ष्य

अर्थग्रहण :

सुनकर, देखकर, पढ़कर या अनुभूति के माध्यम से बात सरलता से समझ में आ जाए उसे "अर्थग्रहण" माना जाता है. अर्थग्रहण मातृभाषा में एक अर्जित संपत्ति है. अनुकरण, अवलोकन, अनुभव और व्यवहार में प्रयोग से भाषा सीखी जाती है. अनुकरण, अवलोकन और अनुभव के लिए सुनना और पढ़ना नितांत आवशयक है. अर्थग्रहण से व्यक्ति की सोच भी बढ़ती है. अर्थग्रहण के लिए कक्षानुसार प्रस्तुतिकरण और योग्य माध्यम की पसंदगी जरुरी है. अर्थग्रहण न होने से भाषा शिक्षा के सभी प्रयत्न व्यर्थ हो जाते है.

अभिव्यक्ति :

विचारो, अनुभव, भावों, जरूरतों और इच्छाओ को मौखिक, लिखित या सांकेतिक रूप से व्यक्त करना "अभिव्यक्ति" है. अभिव्यक्ति जीवन का अविभाज्य अंग है. भाषा के माध्यम से व्यक्ति अपनी संवेदना, विचार या स्थिति को अभिव्यक्त कर सकता है. वक्तव्य, नाटक, गीत आदि को मौखिक रूप से प्रस्तुत कर, ध्वनियों को मुद्रित कर एवं लिखित रूप में ढाल कर अपने विचारो को चिरंजीवी भी बना सकता है. भाषा का पराम् लक्ष्य ही "अभिव्यक्ति" है.

सर्जनात्मकता:

"सर्जनात्मकता" अर्थात नई वस्तु का निर्माण करना एवं नई चीज खोजना. साथ ही साथ ही पुरानी चीजों में नयापन लाना ही "सर्जनात्मकता" कही जाती है. भाषा के नाविनयपूर्ण और कलात्मक प्रयोग के द्वारा अपने भावों की मौलिक अभिव्यक्ति भी "सर्जनात्मकता" है. यही उद्येश्य विकसित होने पर व्यक्ति भाषा की वैविध्यतापूर्ण विधियों में अपने भावों और विचारो को चिरस्थायी बना सकता है और अपने जीवन को भी उन्नत बना सकता है. साथ ही भाषा का विकास एवं सर्जन होता है.

व्यावहारिक उपयोजन:

अनुभूति, अर्जित माहिती और ज्ञान, समझ का व्यवहार में प्रयोग करना "व्यावहारिक उपयोजन" है. भाषा को सही ढंग और सही रूप से रोजमर्रा के जीवन में उपयोग करना ही भाषा के परिपेक्ष्य में "व्यावहारिक उपयोजन" है. भाषिक तत्वों की पहचान और इनके द्वारा भाषा को हस्तगत कर अपने विचारो और भावों का उपयोग करे, यही आवशयक है. भाषा प्रकृतित: सम्प्रेषण का उपकरण सम्प्रेषण के लिए अनिवार्य है - भाषा का सार्थक उपयोग. भाषा अलंकार की सामग्री नहीं है, भाषा व्यव्हार की सामग्री है. अर्थात भाषा व्यावहारिक उपयोग का महत्त्व है.

तार्किक चिंतन :

किसी भी विषय के सम्बन्ध में तर्कपूर्ण सोचना या चिंतन करना, मनन करते हुए अपनी बात को प्रगट करना "तार्किक चिंतन" है. यह किसी भी व्यक्ति की सोच विचार करने की मानसिक प्रक्रिया है. जो वैज्ञानिक अभिगम आधारित है.

तार्किक चिंतन मुक्त चिंतन है. तार्किक चिंतन करनेवाले उनको समझ में न आये ऐसी माहिती का सत्य रूप से सिद्धांत को नकारते है. इससे व्यक्ति अपने जीवन के अनुभव, मान्यताए और दृष्टिकोण का उपयोग माहिती का पृथकरण करने के स्वीकारता है.

अनुभव अभिव्यक्ति का रूप तब धारण करता है, जब व्यक्ति ने अनुभव के विषय में तार्किक रूप से ग्रहण किया हो. तार्किक अनुभूति का रूप तब धारण करता है जब अनुभव के विषय में तार्किक चिंतन हुआ हो. शिक्षा अनुभव प्रदान करती है, तथा अनुभव को अनुभिति में परिवर्तित करती है. इस हेतु भाषा शिक्षा के द्वारा छात्रों की तार्किक चिंतन क्षमता का विकास होना जरुरी है.

सारांश:

मातृभाषा में शिक्षा को महत्व देते हुए अभिभावकों को मातृभाषा का महत्व और सुंदरता की जानकारी प्राप्त करनी आवशयक है. वर्तमान समय में ज्ञान आवशयक है लेकिन ज्ञान प्राप्ति का माद्यम मातृभाषा हो तो ज्ञान प्राप्ति सहज और गहरी प्रभावात्मक हो जाती है. मातृभाषा में ज्ञान और उसके महत्व से ही भविषय में मातृभाषा का अस्तित्व बनी रहती है और आगे की पीढ़ी तक भाषा हस्तांतरण प्रभावी बन सकता है. वर्तमान समय की मांग के अनुसार अंगेजी शिक्षा का ज्ञान आवशयक है पर सभी को अपनी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा और अंतराष्ट्रीय भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है.

सन्दर्भ:

(१) रावल नटुभाई, (२०१४), मातृभाषा का अभिनव अध्ययन, नीरव प्रकाशन, अहमदाबाद

**** Corresponding Author:***
डॉ. चित्रा जीतेन्द्र सिंह
L-82/A-2, Railway Colony, Moradabad, U.P.
drchitrapalsingh@yahoo.com, 9410010561